MARX - HISTORICAL MATERIALISM

OR MATERIALISTIC INTERPRETATION OF HISTORY

मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद, उसके द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का समाज के विकास की व्याख्या के लिये दिया गया एक सिद्धान्त है। दूसरे शब्दों में, इतिहास की विभिन्न घटनाओं की आर्थिक व्याख्या ही ऐतिहासिक भौतिकवाद कहा जा सकता है। अपने इस सिद्धांत का प्रारंभ मार्क्स यह कहते हुए करता है कि 'Man must live to ... and his survival depends on the success with which he can produce what he wants.' इसतरह मार्क्स के अनुसार Production is the most important of all the human activities, और यह भी कि समाज जीवन की भौतिक आवश्यकताओं को प्राप्त करने के प्रयास का परिणाम है। लेकिन Marx ने यह स्वीकार किया है कि चूंकि अपने सदस्यों की सम्पूर्ण आवश्यकताओं का उत्पादन समाज नहीं कर पाता है, अतः समाज में आवश्यक रूप से तनाव उत्पन्न हो जाता है। इसतरह कहा जा सकता है कि समाज की संरचना उत्पादन की परिस्थितियों के द्वारा निर्धारित होती है।

इतिहास की व्याख्या विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-२ ढंग से की है। जैसे - हीगेल के अनुसार - 'इतिहास में जितने भी दीर्घकालीन परिवर्तन होते हैं उनके पीछे सत्य की अभिव्यक्ति होती है।' यह इतिहास की आदर्शवादी व्याख्या है। जबकि Buckle ने इतिहास की भौगोलिक व्याख्या करते हुए यह कहा है कि इतिहास की घटनाओं को समझने के लिये भौगोलिक तत्वों का सहारा लेना होगा क्योंकि मनुष्य के जीवन पर जलवायु का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। किन्तु कार्लाइल ने ऐतिहासिक घटनाओं के लिये नेतृत्व के व्यक्तित्व को महत्वपूर्ण कारण माना है। कुछ विचारकों ने इतिहास की धार्मिक व्याख्या भी प्रस्तुत की है। लेकिन जहाँ तक Marx का प्रश्न है उसने इतिहास की इन सभी व्याख्याओं का खण्डन करते हुए इतिहास की आर्थिक व्याख्या की है कि 'सम्पूर्ण इतिहास की संपूर्ण घटनाओं का एकमात्र आधार समाज की आर्थिक प्रणाली है।' स्वयं मार्क्स के शब्दों 'All the social political and intellectual relations, all religions and legal systems, all the theoretical outlooks which emerge in the course of history are derived from the material conditions of life.' मार्क्स के द्वारा इतिहास की इसी व्याख्या को उसका Historical Materialism या Economic or Materialistic Interpretation of History या Economic Determinism का सिद्धान्त कहा जाता है।

ऐतिहासिक भौतिकवाद की व्याख्या के क्रम में Marx ने इतिहास की चार अवस्थाओं का जिक्र किया है - (i) Primitive Communism (आदिम साम्यवादी अवस्था), (ii) Slave Society, (iii) Feudal Society, (iv) Capitalistic Society. Primitive Communism की व्याख्या करते हुए Marx कहता है कि सामाजिक विकास की इस पहली अवस्था में उत्पादन के तरीके बहुत सरल थे तथा उत्पादन के साधन समस्त समाज की सामूहिक सम्पत्ति हुआ करते थे। इस अवस्था में न तो कोई परिवार था - न कोई निजी सम्पत्ति और न ही कोई शोषण। किंतु Marx के अनुसार जब धीरे धीरे भौतिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ तब समाज में निजी सम्पत्ति के विचार का उदय हुआ और जिन व्यक्तियों ने उत्पादन के तत्कालीन एकमात्र साधन भूमि पर अधिकार कर लिया उन्होंने कुछ अन्य व्यक्तियों को दास बनाकर उस भूमि खण्ड पर बलपूर्वक

Scanned with CamScanner

काम करना प्रारंभ कर दिया। सामाजिक विकास की इस दूसरी अवस्था में इस तरह दो सामाजिक वर्गों - स्वामी एवं दास का जन्म हुआ, स्वामियों के द्वारा दासों का शोषण प्रारंभ हो गया तथा इसी व्यवस्था के अनुकूल राजनीतिक संगठन, दर्शन तथा साहित्य की रचना की गयी। फिर Marx के अनुसार जब उत्पादन के साधनों में उन्नति हुई तो दास व्यवस्था वाले छोटे-2 भूस्वामी बड़े-2 सामंतों के रूप में स्थापित होने लगे जो किसानों और श्रमिकों पर अपना कठोर नियंत्रण स्थापित कर उनका शोषण बृहत् पैमाने पर करने लगे। Marx ने लिखा है कि 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आकर जब औद्योगिक क्रांति हुई तो उत्पादन के साधनों में आमूल परिवर्तन आ गया। सामन्त अपनी उन्नत आर्थिक स्थिति के कारण अपनी पूंजी को उद्योगों की स्थापना में लगाने लगे। इन उद्योगों में श्रमिकों के श्रम का प्रयोग पूंजी के अधिकाधिक निर्माण में किया जाने लगा। Marx के अनुसार अब पूंजीवादी समाज की स्थापना हो गयी जिसमें Theory of Surplus Value के आधार पर पूंजीपति और अधिक धनवान होते गये जबकि श्रमिकों की स्थिति और भी बदतर हो गयी। इस अवस्था में Marx के अनुसार एक दूसरी बात यह हुई कि छोटे-2 पूंजीपति भी धीरे-धीरे श्रमिकों की स्थिति में जाने लगे और इस तरह श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हो गयी और दूसरी ओर पूंजी का केन्द्रीकरण कम से कम लोगों के हाथों में होता गया।

Marx कहता है कि इस पूंजीवादी व्यवस्था में श्रमिकों के भयंकर शोषण के कारण समाज स्पष्टतः दो संघर्षशील वर्गों (Haves and Have nots) या बुर्जुआ - शोषक वर्ग तथा सर्वहारा - शोषित वर्ग के रूप में विभाजित हो गया। Marx ने जब अपने सिद्धान्तों की रचना की उस समय तक उसके अनुसार समाज उपरोक्त चार अवस्थाओं से गुजर चुका था। और अब दो स्थितियाँ शेष थी - Dictatorship of the Proletariat तथा Communistic Society. Marx का विचार है कि पूंजीवादी अवस्था में द्वंदात्मक भौतिकवाद के आधार पर श्रमिक अपनी विपन्न आर्थिक स्थिति से तंग आकर पूंजीवाद का अन्त करने के लिये संपूर्ण पूंजीवादी व्यवस्था पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेंगे। इसे मार्क्सवाद ने ऐतिहासिक विकास में Dictatorship of the Proletariat का Stage कहा है। इस अवस्था में बहुसंख्यक श्रमिकों के द्वारा अल्पसंख्यक पूंजीपतियों का तब तक शोषण किया जायेगा जबतक कि पूंजीवाद के सारे अवशेष समाप्त नहीं हो जाते। जब पूंजीवादी व्यवस्था के सारे अवशेष समाप्त हो जायेंगे तो Marx के अनुसार समाज में केवल एक वर्ग रहेगा और चूंकि एक ही वर्ग का अस्तित्व होगा इसलिये वर्गशोषण का अन्त हो जायेगा, संघर्ष का अन्त हो जायेगा, निजी सम्पत्ति नहीं रहेगी तो इस classless society में Ultimately the state will wither away.

Marx के द्वारा इतिहास की उपरोक्त आर्थिक व्याख्या से निम्नलिखित कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं —

1. सामाजिक विकास के कुछ निश्चित नियम हैं, न कि सामाजिक विकास के लिये परिवर्तन ईश्वर की इच्छा या किसी अन्य तत्व पर निर्भर करता है।

2. प्रत्येक युग की सामाजिक व्यवस्था पर उसी वर्ग का आधिपत्य होता है जिसका उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व होता है।

3. समस्त सामाजिक व्यवस्था उत्पादन की स्थिति तथा उत्पादन के साधनों पर निर्भर करती है। जैसे ही उत्पादन के साधनों में परिवर्तन होता है,

Scanned with CamScanner

संस्थाएँ और विचार बदल जाते हैं।

4. वर्ग संघर्ष ऐतिहासिक विकास की कुंजी है, किन्तु साम्यवादी समाज के वर्गविहीन रूप में वर्ग संघर्ष की यह प्रक्रिया समाप्त हो जाती है।

5. अन्त में, Marx के अनुसार यद्यपि साम्यवादी समाज की स्थापना का समय निश्चित नहीं है किन्तु साम्यवादी समाज की स्थापना अवश्यम्भावी है। स्पष्टतः इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या के आधार पर मार्क्स ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि " The mode of production of material life, determines the social, political and intellectual life process in general. It is not the consciousness of men that determines their social existence, but rather it is their social existence, that determines their consciousness.' ~~किन्तु~~

~~किन्तु~~ यद्यपि मार्क्स की इतिहास की आर्थिक व्याख्या ने विश्व की अधिकांश जनसंख्या तथा आधुनिक सामाजिक आर्थिक व्यवस्था को स्थायी रूप से प्रभावित किया है, कई विद्वानों ने उसकी इस व्याख्या में कतिपय त्रुटियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है → CRITICISM → सबसे पहली बात यह कही जाती है कि मार्क्स ने इतिहास की रचना में Non-economic factors की भूमिकाओं की अवहेलना करके भारी भूल की है। और यह भी कि उसने Human Patience, Sentiments, Emotions, Religion आदि तत्वों की महत्ता को ~~बहुत~~ बिल्कुल ही महत्व नहीं दिया है। निःसन्देह आर्थिक कारक, मानवीय सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं किन्तु यह कहना निश्चित रूप से गलत होगा कि संपूर्ण मानवीय क्रियाएँ एकमात्र आर्थिक सम्बन्धों से ही प्रभावित होती हैं। Laski ने भी कहा है-" The love of power, ~~Read~~ instinct, rivalry, the desire of display, all these are hardly less vital than the acquisitiveness which explains the strength of material environment.' मार्क्स की इतिहास की आर्थिक व्याख्या की आलोचना यह कहकर भी की जाती है कि Marx ने अपनी इस व्याख्या में आर्थिक तत्व ~~पर~~ पर अत्यधिक और अनावश्यक बल दिया है, उसने इतिहास के निर्धारण में संयोग के तत्व की उपेक्षा की है क्योंकि मानवीय इतिहास के कार्यक्रम का निर्धारण ठोस रूप से संभव नहीं है, राजनीतिक सत्ता का एकमात्र आधार आर्थिक सत्ता नहीं हो सकता और आर्थिक सम्बन्धों को राजनीतिक शक्ति के द्वारा बदला भी जा सकता है। फिर, मार्क्स की व्याख्या का Classless and Stateless Society एक भी विश्व में कहीं भी स्थापित ही नहीं हो सका और आज कहीं समाजवादी समाज की स्थापना हुई भी तो आज वह टूटती जा रही है जैसा कि सोवियत संघ के उदाहरण से स्पष्ट है। जो भी हो अपने उपरोक्त दोषों अथवा कमियों के बावजूद मार्क्स की इतिहास की भौतिकवादी अथवा आर्थिक व्याख्या ने राजनीतिक व्यवस्थाओं की पुनः रचना के लिये एक व्यापक आधार प्रदान किया तथा इसने राजनीतिशास्त्र के अध्ययन का क्षेत्र व्यापक बनाया साथ ही मजदूरवर्गों की स्थिति में सुधार लाने के, लिये विश्व की सरकारों को मजबूर किया ~~क्यों~~ कि ' Workers of the World Unite ....' का उद्घोष कर विश्व के श्रमिकों को ~~क्रान्ति~~ क्रांति के प्रेरित किया।